जैन जी. के.

General Knowledge

भाग -9

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

१

प्रार्थना

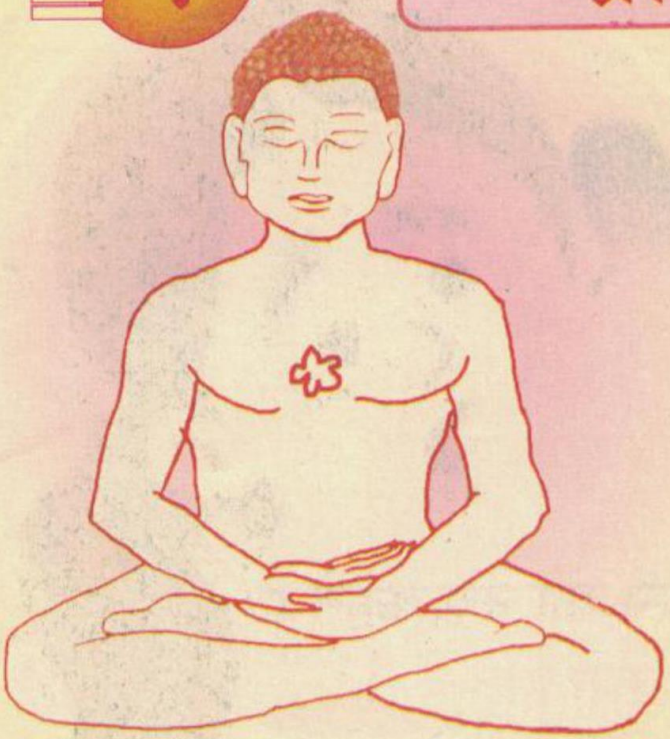

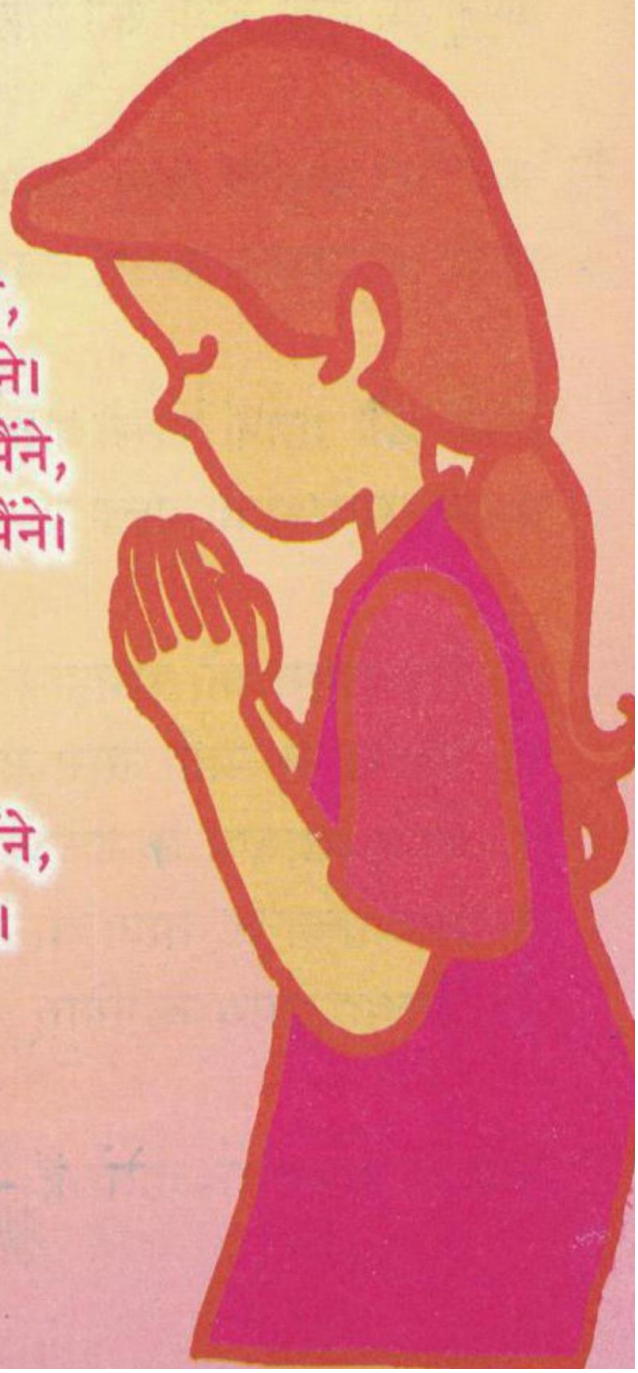

सारे जगत को दो भागों में बाँटा मैंने,
एक में जीव, दूसरे में अजीव रखा मैंने।
सभी जीवों को भी दो भागों में बाँटा मैंने,
स्व को जीव, पर को अजीव में रखा मैंने।
मैं चेतन, शेष अचेतन माने मैंने ,
मैं ज्ञान, शेष ज्ञेय जाने मैंने ।
इसप्रकार
पर से विभक्त किया, स्व को जब मैंने,
अपने में ही एकत्व किया तब मैंने ।
क्योंकि,
पर दृष्टि में दुःख है जाना मैंने,
स्व दृष्टि में सुख है माना मैंने।

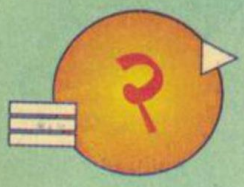

२

नय

१. नय किसे कहते हैं ?

वस्तु के एक अंश को ग्रहण करने को नय कहते हैं।

२. नय अंशों को ग्रहण करने वाले क्यों होते हैं ?

नयों की प्रवृत्ति वस्तु के एक देश में होने से नय अंशों को ग्रहण करने वाले होते हैं ।

३. नयों का कथन सापेक्ष होता है या निरपेक्ष ? और क्यों ?

अंशों को ग्रहण करने वाला होने के कारण नयों का कथन सापेक्ष ही होता है ।

४. नयों का स्वरूप समझना आवश्यक क्यों है ?

अ) जिनागम को समझने के लिए

ब) आत्मा के सही ज्ञान के लिए

क) वस्तु स्वरूप के सच्चे ज्ञान के लिए

ड) मिथ्यात्व के नाश के लिए

ई) आत्मानुभव के लिए

५. नय कितने प्रकार के होते हैं ? नाम बताओ।

नय दो प्रकार के होते हैं - अध्यात्म के नय और आगम के नय ।

३

अध्यात्म के नय

१. अध्यात्म के नय किसे कहते हैं?

जिनमें आत्मद्रव्य की मुख्यता से कथन होता है, उन्हें अध्यात्म के नय कहते हैं। इसमें आत्मा का परिचय देकर हेय-उपादेय बुद्धि जाग्रत कराई जाती है।

२. अध्यात्म के नय कितने हैं? नाम बताओ।

अध्यात्म के नय दो हैं - निश्चय और व्यवहार।

३. निश्चय किसे कहते हैं ?

सच्चे निरूपण को निश्चय कहते हैं। यह नय दो भिन्न - भिन्न वस्तुओं में प्रयोजनवश स्थापित की गई एकता का खण्डन करता है। जैसे - जीव व देह कभी एक नहीं हो सकते और यह नय एक अखण्ड वस्तु में भेंदो का निषेध कर अखण्डता की स्थापना भी करता है। जैसे - जीव ज्ञान, दर्शन, सुख आदि भेद से भिन्न अखण्ड द्रव्य है ।

४. व्यवहार किसे कहते हैं ?

उपचरित निरूपण को व्यवहार कहते हैं। यह नय दो भिन्न-भिन्न वस्तुओं में अभेद स्थापित करता है। जैसे - जीव व देह एक ही है और यह नय एक अखण्ड वस्तु में भेद भी करता है। जैसे - जीव ज्ञानवाला है, दर्शनवाला है आदि ।

आगम के नय

१. आगम के नय किसे कहते हैं ?
जिनमें छह द्रव्यों की मुख्यता से कथन होता है, उन्हें आगम के नय कहते हैं।

२. आगम के नय कितने हैं ? नाम बताओ
आगम के नय दो हैं - द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक।

३. द्रव्यार्थिक नय किसे कहते हैं ?
वस्तु के सामान्य, एक, नित्य, अभेद अंश को ग्रहण करने वाले ज्ञान के अंश को द्रव्यार्थिक नय कहते हैं।

४. पर्यायार्थिक नय किसे कहते हैं ?
वस्तु के विशेष, अनेक, अनित्य, भेद अंश को ग्रहण करने वाले ज्ञान के अंश को पर्यायार्थिक नय कहते हैं।

५. द्रव्यार्थिक नय का विषय क्या है?
सामान्य, अभेद, नित्य, एक।

६. द्रव्यार्थिक नय के विषय को क्या कहते हैं ?
द्रव्य।

७. पर्यायार्थिक नय का विषय क्या है?
विशेष, भेद, अनित्य, अनेक।

८. पर्यायार्थिक नय के विषय को क्या कहते हैं ?
पर्याय

९. क्या द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक दोनों नय एक ही समय में घट सकते हैं ?
हाँ, दोनों नय एक ही समय में घट सकते हैं।

निश्चय - व्यवहार रत्नत्रय

१. निश्चय सम्यग्दर्शन से क्या तात्पर्य है ?
पर द्रव्यों से भिन्न आत्म श्रद्धान ही निश्चय सम्यग्दर्शन है ।

२. निश्चय सम्यग्ज्ञान से क्या तात्पर्य है ?
पर द्रव्यों से भिन्न अपने स्वरूप को जानना ही निश्चय सम्यग्ज्ञान है ।

३. निश्चय सम्यक्चारित्र से क्या तात्पर्य है ?
पर द्रव्यों से भिन्न अपने स्वरूप में लीन होना ही निश्चय सम्यक्चारित्र है ।

४. व्यवहार सम्यग्दर्शन से क्या तात्पर्य है ?
देव-शास्त्र-गुरु और सात तत्त्वों का श्रद्धान ही व्यवहार सम्यग्दर्शन है ।

५. व्यवहार सम्यग्ज्ञान से क्या तात्पर्य है ?
जीवादि सात तत्त्वों का संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय रहित ज्ञान व्यवहार सम्यग्ज्ञान है ।

६. व्यवहार सम्यक्चारित्र से क्या तात्पर्य है ?
सम्यग्दर्शनपूर्वक भाव शुद्धि सहित बाह्य आचरण व्यवहार सम्यक्चारित्र है । यह दो प्रकार का होता है - देशचारित्र और सकलचारित्र ।

७. निश्चय - व्यवहार सम्यग्दर्शन एक साथ हो सकते हैं ?
हाँ, दीपक और प्रकाश की तरह दोनों सम्यग्दर्शन एक साथ ही होते हैं ।

6 चारित्र के भेद

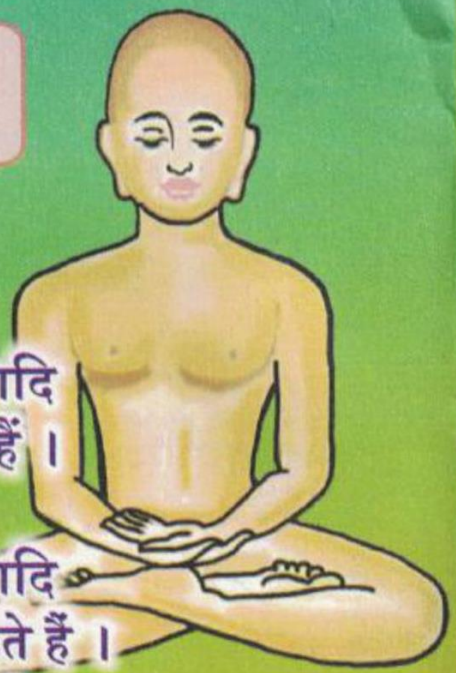

१. देशचारित्र किसे कहते हैं ?
हिंसादि पापों के एकदेश त्याग और अहिंसादि व्रतों के एकदेश पालन को देशचारित्र कहते हैं ।

२. सकल चारित्र किसे कहते हैं ?
हिंसादि पापों के सर्वदेश त्याग और अहिंसादि व्रतों के पूर्णतः पालन को सकलचारित्र कहते हैं ।

३. देशचारित्र में होने वाले व्रतों को क्या कहते हैं ?
अणुव्रत, गुणव्रत और शिक्षाव्रत ।

४. सकल चारित्र में होने वाले व्रतों को क्या कहते हैं ?
महाव्रत।

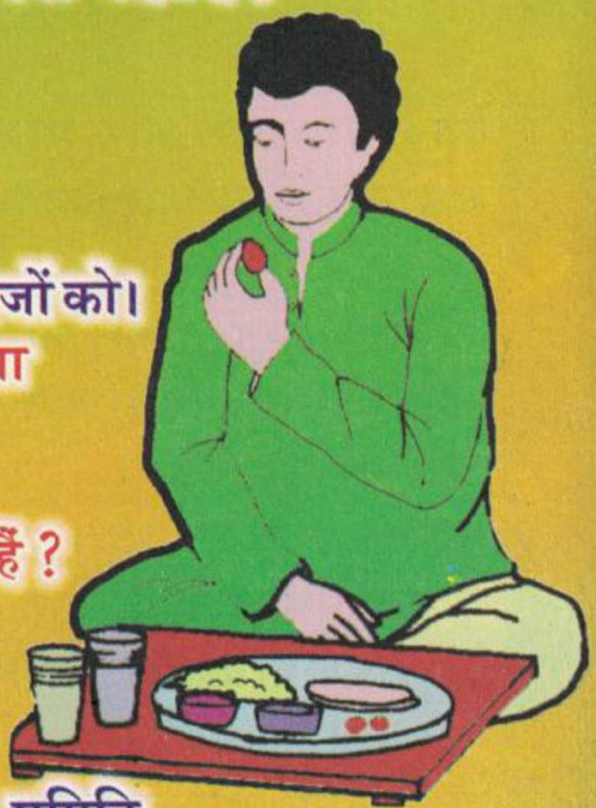

५. देशचारित्र किन्हें होता है ?
पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावकों को।

६. सकल चारित्र किन्हें होता है ?
भावलिंगी ६-७वे गुणस्थानवर्ती मुनिराजों को।

७. क्या सकल चारित्र धारण किए बिना अरहंत, सिद्ध हो सकते हैं ?
नहीं।

८. देशव्रती श्रावक के कितने व्रत होते हैं ?
बारह व्रत होते हैं - ५ अणुव्रत, ३ गुणव्रत, ४ शिक्षाव्रत।

९. मुनिराजों के कितने मूलगुण होते हैं ?
२८ मूलगुण होते हैं - ५ महाव्रत, ५ समिति, ५ इन्द्रियविजय, ६ आवश्यक, ७ शेष गुण।

7 जीव के असाधारण भाव

१) असाधारण भाव से क्या तात्पर्य है ?
जो जीव के अतिरिक्त अन्य किसी द्रव्य में नहीं पाए जाते, मात्र जीव में ही पाए जाते हैं, वे असाधारणभाव कहलाते हैं ।

२) जीव के असाधारण भाव कितने हैं ? नाम बताइए ।
जीव के पाँच असाधारण भाव हैं - पारिणामिक, औदयिक औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ।

३) पारिणामिक भाव से क्या तात्पर्य है ?
ध्रुव सदा एक रूप रहने वाले भाव पारिणामिक भाव है। इनमें कर्म का सद्भाव या अभाव कुछ भी निमित्त नहीं होता ।

४) औदयिकभाव से क्या तात्पर्य है ?
कर्मों के निमित्त से आत्मा में होने वाले विकारीभाव ही औदयिकभाव है । इसमें कर्मों का उदय होता है ।

५) औपशमिकभाव से क्या तात्पर्य है ?
आत्मा के पुरुषार्थ द्वारा कर्मों के उपशम से होने वाले सम्यक्त्व और चारित्र औपशमिकभाव हैं ।

६) क्षायिकभाव से क्या तात्पर्य है ?
आत्मा के पुरुषार्थ द्वारा किसी गुण की शुद्ध अवस्था का प्रगट होना क्षायिक भाव है । इसमें कर्मों का क्षय होता है ।

७) क्षायोपशमिकभाव से क्या तात्पर्य है ?
आत्मा के पुरुषार्थ द्वारा श्रद्धा और चारित्र की आंशिक शुद्ध अवस्था क्षायोपशमिकभाव है । इसमें कर्मों का आंशिक क्षय और आंशिक उपशम होता है।

8 क्या आप जानते हो?

१) कर्मों के उपशम से कौन सा भाव होता है?
औपशमिक भाव ।

२) कर्मों के क्षयोपशम से कौन सा भाव होता है?
क्षायोपशमिक भाव।

३) कर्मों के उदय से कौन सा भाव होता है?
औदयिक भाव।

४) कर्म निरपेक्ष कौन सा भाव है?
पारिणामिक भाव।

५) कर्मों के क्षय से कौन सा भाव होता है?
क्षायिक भाव ।

६) क्या जीव कर्म के कारण विकार करता है?
जीव स्वयं की भूल से विकार करता है और इसमें कर्म का उदय तो निमित्त मात्र है।

9

बताओ तो जानें?

१) पारिणामिक भाव क्या बतलाता है?
शुद्ध चैतन्यभाव जीव का स्वभाव है।

२) औदयिक भाव क्या बतलाता है?
जीव का शुद्ध चैतन्य स्वभाव होने पर भी वर्तमान अवस्था में विकार है।

३) औपशमिक भाव क्या बतलाता है?
जीव का सर्व प्रथम श्रद्धागुण का औदयिक भाव दूर होना प्रारंभ होता है।

४) औदयिक भाव कैसे दूर होता है?
पारिणामिक भाव के आश्रय से।

५) क्षायोपशमिक भाव क्या बतलाता है?
जीव अनादिकाल से विकार करता हुआ भी जड़ नहीं हो जाता।

६) क्षायिक भाव क्या बतलाता है?
जीव के विकार का नाश हो सकता है।

सही उत्तर चुनिए

१) ..... भाव के बिना कोई जीव नहीं है ।
(क) औदयिक (ख) पारिणामिक (ग) क्षायोपशमिक [ख]

२) ..... भाव के बिना कोई संसारी जीव नहीं है ।
(क) औदयिक (ख) पारिणामिक (ग) क्षायोपशमिक [क]

३) ..... भाव के बिना कोई छद्मस्थ नहीं है ।
(क) औदयिक (ख) पारिणामिक (ग) क्षायोपशमिक [ग]

४) ..... भाव के बिना क्षायिक समकिती, क्षायिक चारित्रवंत और अरहंत तथा सिद्ध नहीं है ।
(क) क्षायिक (ख) पारिणामिक (ग) औपशमिक [क]

५) ..... भाव के बिना कोई धर्म की शुरुआतवाले नहीं है ।
(क) क्षायिक (ख) पारिणामिक (ग) औपशमिक [ग]

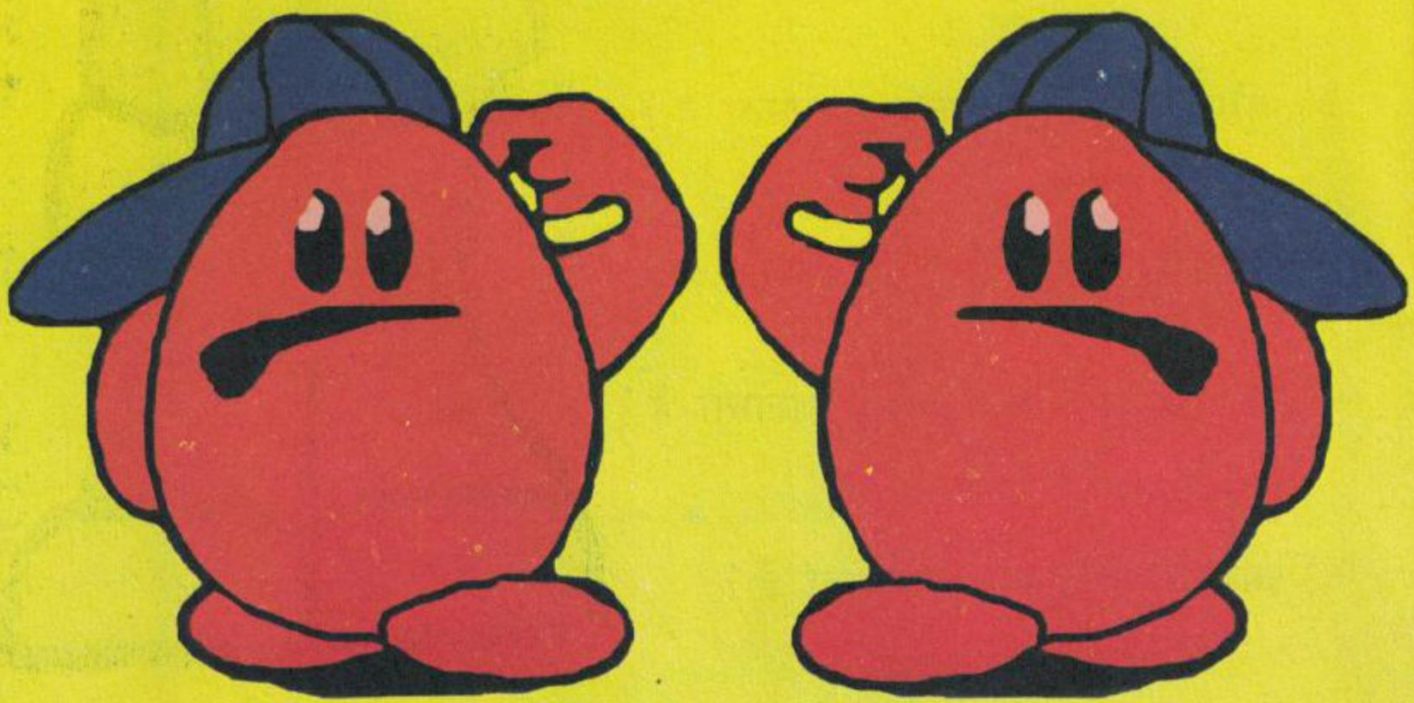

11 वस्तु और तत्त्व

वस्तु जैसी है, वैसी बतलाता हूँ।
वस्तु का सच्चा स्वरूप कहता हूँ।
सात भेदों में पाया जाता हूँ।
बतलाओ तो मै कौन हूँ ?
- तत्त्व, तत्त्व, तत्त्व।

१. वस्तु किसे कहते हैं ?
जिसमें द्रव्य, गुण, पर्याय और प्रदेश शामिल हों, उसे वस्तु कहते हैं अथवा जिसमें द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव ये चार चीजें पाई जावें उसे वस्तु कहते हैं।

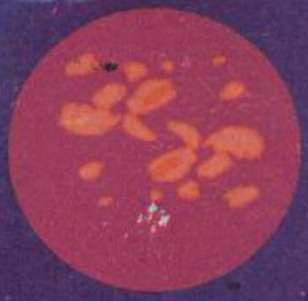

२. वस्तु की आठ विशेषताएँ कौन-कौन सी हैं।
वस्तु द्रव्य की अपेक्षा सामान्य - विशेष है।
वस्तु क्षेत्र की अपेक्षा भेद-अभेद है।
वस्तु काल की अपेक्षा नित्य - अनित्य है।
वस्तु भाव की अपेक्षा एक-अनेक है।

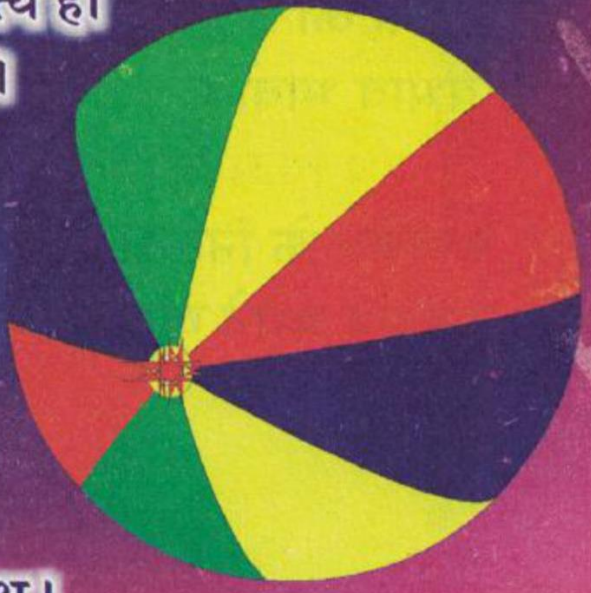

३. वस्तु का स्वरूप कैसा है?
अनेकान्त स्वरूप।

४. तत्त्व किसे कहते हैं ?
वस्तु के सच्चे स्वरूप को।

५. तत्त्व कितने होते हैं ? नाम बताओ।
तत्त्व सात होते हैं - जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष।

जीव-अजीव-आश्रव-बंध

१. जीव तत्त्व किसे कहते हैं ?

ज्ञान-दर्शन स्वभावी आत्मा को जीवतत्त्व कहते हैं।

२. अजीव तत्त्व किसे कहते हैं ?

आत्मा से भिन्न पांच द्रव्यों को अजीव तत्त्व कहते हैं।

३. आश्रव के कितने भेद हैं? नाम बताओ।

आश्रव के दो भेद हैं - भावाश्रव और द्रव्याश्रव ।

४. भावाश्रव किसे कहते हैं ?

मोह, राग, द्वेष भावों को भावाश्रव कहते हैं।

५. द्रव्याश्रव किसे कहते हैं ?

भावाश्रव के निमित्त से ज्ञानावरणादि कर्मों के स्वयं आने को द्रव्याश्रव कहते हैं।

६. बंध के कितने भेद हैं ?

बंध के दो भेद हैं - भावबंध और द्रव्यबंध

७. भावबंध किसे कहते हैं ?

आत्मा का अज्ञान, मोह, राग, द्वेष, पुण्य-पाप आदि विभाव भावों में रुक जाने को भावबंध कहते हैं।

८. द्रव्यबंध किसे कहते हैं ?

भावबंध के निमित्त से पुद्गल का स्वयं कर्मरूप बंधने को द्रव्यबंध कहते हैं।

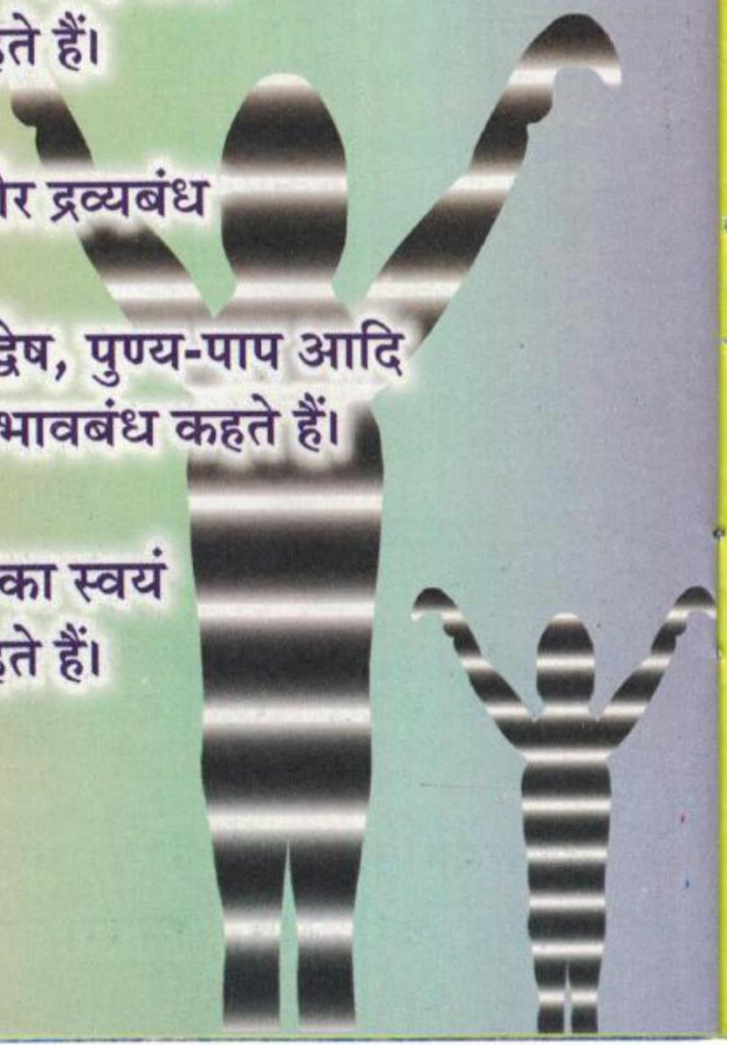

१३

संवर, निर्जरा, मोक्ष

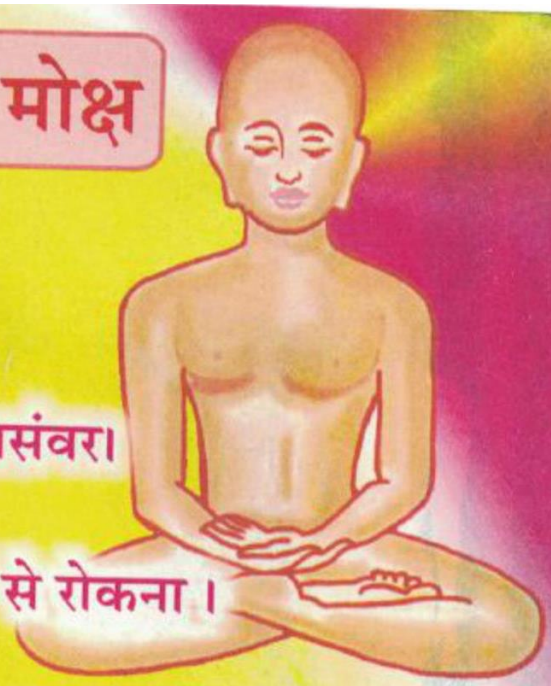

१. संवर के कितने भेद हैं ? नाम बताओ।
संवर के दो भेद है - भावसंवर और द्रव्यसंवर।

२. भावसंवर से क्या तात्पर्य है?
विभाव भावों को आत्मा के शुद्ध भावों से रोकना।

३. द्रव्य संवर से क्या तात्पर्य है?
भाव संवर के अनुसार नये कर्मों का स्वयं आना रुक जाना।

४. निर्जरा के कितने भेद हैं? नाम बताओ।
निर्जरा के दो भेद हैं - भाव निर्जरा और द्रव्य निर्जरा।

५. भाव निर्जरा से क्या तात्पर्य है?
शुद्धात्मा के लक्ष्य के बल से आंशिक शुद्धि की वृद्धि और अशुद्धदशा का आंशिक नाश करना।

६. द्रव्य निर्जरा से क्या तात्पर्य है?
भाव निर्जरा का निमित्त पाकर जड़ कर्मों का अंशतः खिर जाना ही द्रव्य निर्जरा है।

७. मोक्ष के कितने भेद है?
मोक्ष के दो भेद हैं - भाव मोक्ष और द्रव्य मोक्ष।

८. भाव मोक्ष से क्या तात्पर्य है?
अशुद्ध दशा का सर्वथा सम्पूर्ण नाश होकर आत्मा की पूर्ण निर्मल पवित्र दशा का प्रकट होना ही भाव मोक्ष है।

९. द्रव्य मोक्ष से क्या तात्पर्य है ?
बंध के निमित्त कारण द्रव्यकर्म का सर्वथा नाश होना।

जिनागम से

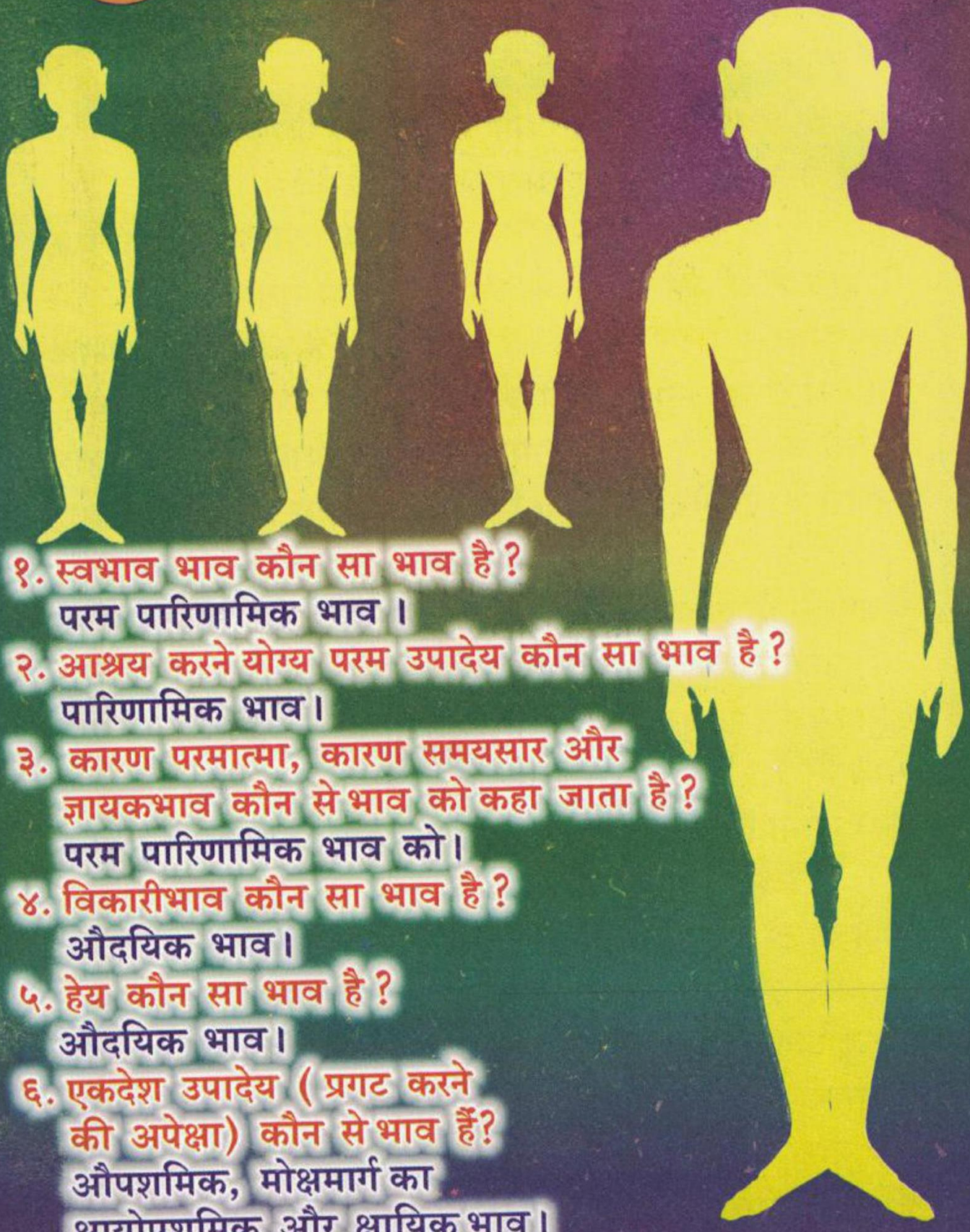

१. स्वभाव भाव कौन सा भाव है?
परम पारिणामिक भाव।

२. आश्रय करने योग्य परम उपादेय कौन सा भाव है?
पारिणामिक भाव।

३. कारण परमात्मा, कारण समयसार और ज्ञायकभाव कौन से भाव को कहा जाता है?
परम पारिणामिक भाव को।

४. विकारीभाव कौन सा भाव है?
औदयिक भाव।

५. हेय कौन सा भाव है?
औदयिक भाव।

६. एकदेश उपादेय (प्रगट करने की अपेक्षा) कौन से भाव हैं?
औपशमिक, मोक्षमार्ग का क्षायोपशमिक और क्षायिक भाव।

१५

भेदविज्ञान

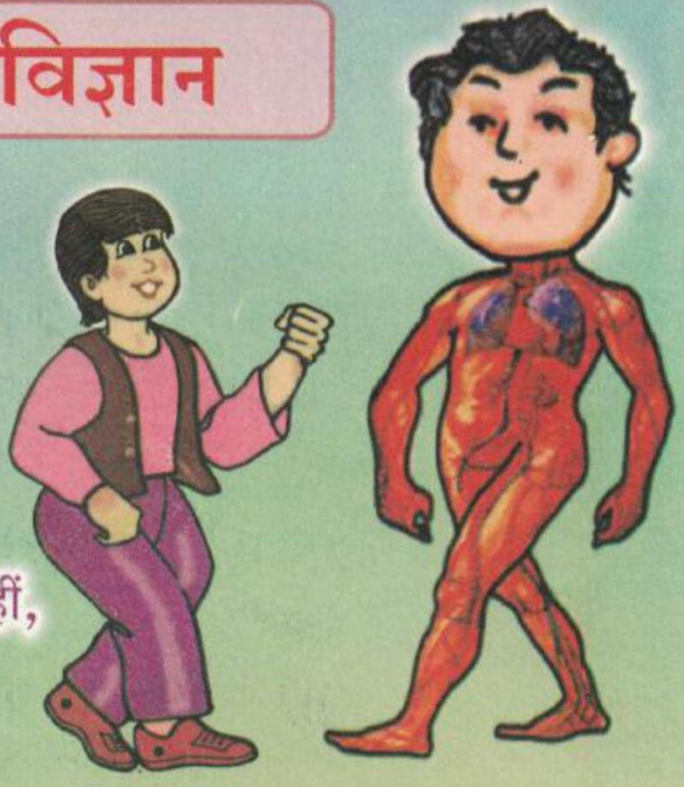

यह एक कहानी नहीं,
यह एक नाचता सत्य है।
हम वो नहीं, जो दिखता है,
जो दिखता है, वो हम नहीं।
शरीर दिखता है, आत्मा दिखता नहीं,
हम आत्मा हैं, शरीर नहीं।
पर शरीर में ही खोए हुए हम हैं,
इसमें ही उलझे हुए हम हैं।
इसमें भटकना बहुत आसान है,
अत: भटका इसमें हर प्राणी है।
इसमें से निकलना आसान नहीं,
पर निकलना ही हमारा ध्येय है।
सदा मौत का अंधियारा घेरे रहता है,
जीवन टिमटिमाता सा दीप लगता है।
क्योंकि जीव का सही स्वरूप नहीं समझते हैं,
जिन्दगी का नाम ही जीव है, नहीं जानते हैं।
जीव मर सकता नहीं, जानना है,
जीव की अमरता पहचानना है।
जीव जुदा, शरीर जुदा,कहना तो आसान है।
जानना भी आसान है,मानना भेदविज्ञान है।
बस यही भेदविज्ञान करना है,
शरीर से जुदा जीव जानना है।

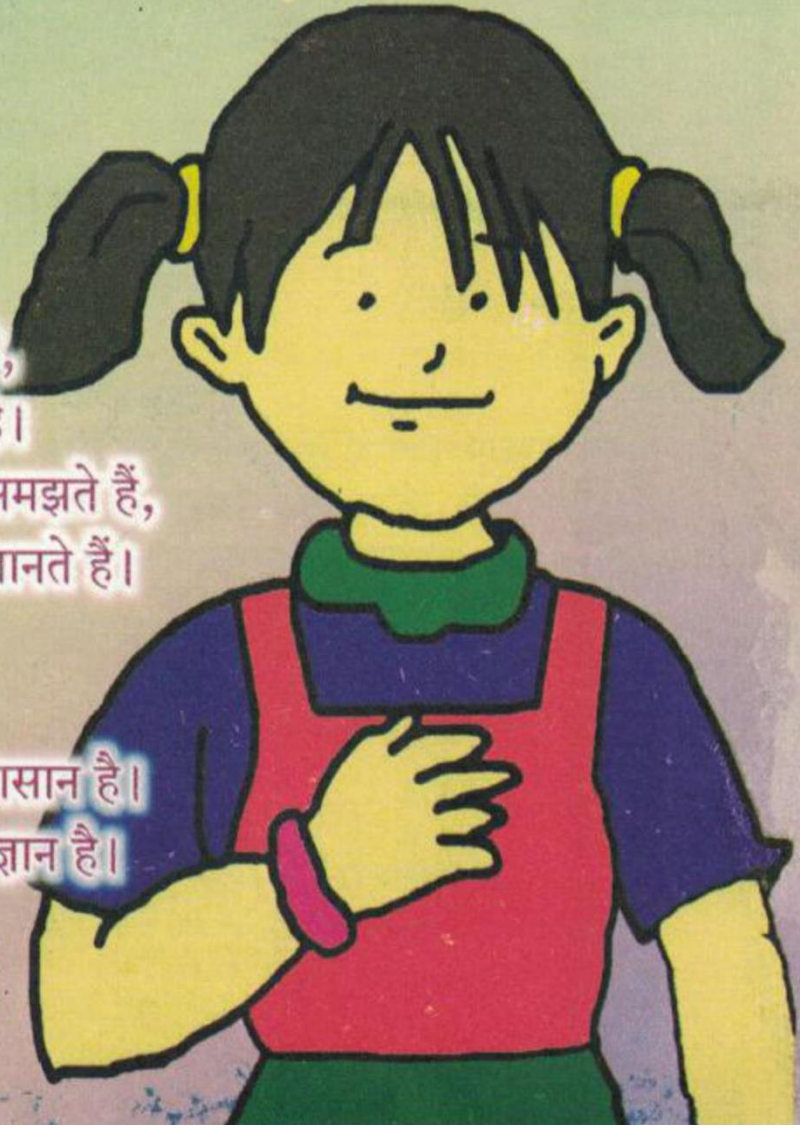

१६

शुद्धात्मा

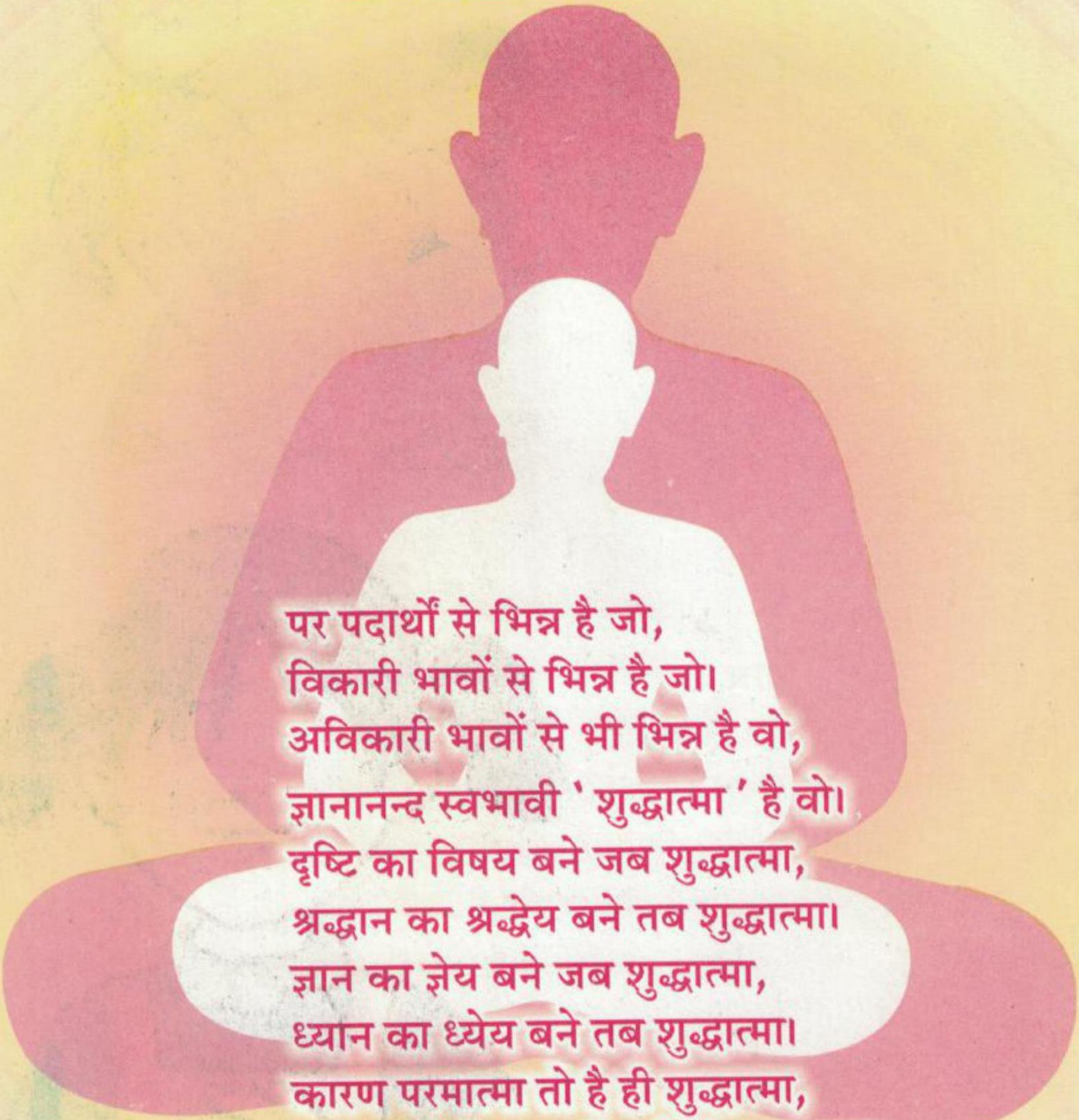

पर पदार्थों से भिन्न है जो,
विकारी भावों से भिन्न है जो।
अविकारी भावों से भी भिन्न है वो,
ज्ञानानन्द स्वभावी 'शुद्धात्मा' है वो।
दृष्टि का विषय बने जब शुद्धात्मा,
श्रद्धान का श्रद्धेय बने तब शुद्धात्मा।
ज्ञान का ज्ञेय बने जब शुद्धात्मा,
ध्यान का ध्येय बने तब शुद्धात्मा।
कारण परमात्मा तो है ही शुद्धात्मा,
स्वभाव से विकार रहित है ही शुद्धात्मा।
पर्याय से विकार रहित जब होती शुद्धात्मा,
कार्य परमात्मा कहलाती है तब शुद्धात्मा।

बाल साहित्य के उत्कृष्ट लेखन हेतु पं. टोडरमल पुरस्कार से सम्मानित विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया को सम्प्रति ८ मार्च २००८ को महिला दिवस के अवसर पर मुम्बई की महापौर के शुभ कर कमलों से सम्मानित किया गया। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की आप सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्री हैं। आपका जन्म अशोकनगर (म.प्र.) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ।

आपने बी. ए. (ऑनर्स) संस्कृत में स्वर्णपदक प्राप्त किया।

आपके द्वारा एम. ए. में लघुशोधनिबंध के रूप में लिखी गई आ. अमृतचंद्र और उनका पुरुषार्थसिध्युपाय नामक पुस्तक मात्र १९ वर्ष की अवस्था (२७ नवम्बर १९७७) में प्रकाशित हो गई।

आपने 'आ. कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार: एक समालोचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पी. एच. डी की उपाधि प्राप्त की है। आपने अपने शोध ग्रन्थ में शोध समीकरणों को ध्यान में रखते हुए आ. कुन्दकुन्द के ग्रंथों और टीकाकारों का सर्वांगीण शोधपरक विवेचन सरल-सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया है जो कि विद्वत्-जन और बुद्धिजीवी वर्ग के साथ-साथ जनसामान्य को भी अपनी ओर आकृष्ट करता है।

आधुनिक बाल जैन साहित्य की प्रणेता आपने जैन सिद्धान्तों को सर्वप्रथम पहेलियों के रूप में प्रस्तुत कर जैन बाल साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकों में पहेलियों, कविताओं और प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गए पाठों के माध्यम से तत्त्वज्ञान एवं भेदविज्ञान कराया गया है। अद्यावधि जैन समाज में प्रचलित अन्य पाठ्यपुस्तकों से भिन्न शैली, रंगीन, चित्रमय प्रस्तुति एवं मूल तत्त्वज्ञान का समावेश - इन पुस्तकों की विशिष्ट पहचान है।

आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन - जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। गद्य-शैली, पद्य-शैली, चम्पू (गद्य-पद्य मिश्रित) शैली, पत्रशैली, डायरीशैली, छोटे-छोटे मंचन योग्य नाटक, बड़े-बड़े नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधायों के दर्शन आपकी कृतियों में होते हैं।

आपकी सभी कृतियाँ अध्यात्मरस से सराबोर और भेद-विज्ञान से ओतप्रोत हैं। सरलता आपकी कृतियों की सबसे बड़ी विशेषता है। कलरफुल चित्रों के माध्यम से रोचक प्रस्तुति और आकर्षक आधुनिक भाषा-शैली में सर्वप्रथम लिखी गई आपकी बाल पुस्तकें मील का पत्थर साबित हुई हैं।

सम्प्रति वह अपने परिवार के साथ मुंबई में रहती हैं। जहाँ आपके पति का हीरे-जवाहरात एवं डायमंड ज्वैलरों का व्यवसाय है। मुंबई में आप आध्यात्मिक प्रवचन करती ही हैं, तथा शिक्षण - प्रशिक्षण शिविरों में आपके द्वारा बालकों और युवाओं के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी कम समय में अधिक से अधिक तत्त्वज्ञान प्राप्त करते हैं।

आपके द्वारा अभी तक छोटी - बड़ी ३३ पुस्तकें लिखी गई हैं, जिनकी सूची अंदर प्रकाशित की गई है।